ह्रीं

श्री गुरुस्तुतिः

सद्गुरोः शैवाचार्यस्य श्रीरामस्य

रचयिता

प्रो० मखनलाल कुकिलू

प्रकाशक :

ईश्वर-आश्रम ट्रस्ट

श्रीनगर • जम्मू • दिल्ली

ह्रीं

श्री गुरुस्तुतिः

शैवाचार्यस्य श्रीरामस्य

रचयिता

प्रो० मखनलाल कुकिलू

प्रकाशक

ईश्वर आश्रम ट्रस्ट

श्रीनगर • जम्मू • दिल्ली

मूल्य - रु. 20.00

परिचय

त्रिकदर्शन-मर्मज्ञ आचार्य-प्रवर सिद्धयोगी मेरे आराध्य श्रीरामजीमहाराज के चरणकमलों में स्तुति पुष्पाञ्जलि अर्पण करते हुए मुझे अत्यन्त हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस पुष्पाञ्जलि में तीन सुगन्धित पुष्प हैं। पहला और दूसरा पुष्प सद्गुरुस्तुति से सुवासित है और तीसरा पुष्प अष्टोत्तर-शतनामावली का सुविकसित श्वेत पद्म है। इन तीनों पुष्पों की महक भिन्न-भिन्न है। आशा है कि साधकवर इन पुष्पों की सुगन्ध को सूंघकर सद्गुरु प्रसाद-प्राप्ति से अवश्य लाभान्वित होंगे।

शांभवपदासीन सद्गुरु श्रीरामजी महाराज के विषय में कुछ कहना वाग्देवी के वाग्जाल से भी अतीत है। अतः सर्वसाधारण जन किन शब्दों में इनका वर्णन कर सकेंगे। जो कुछ लिखने का साहस किया गया है वह न जाने किन पूर्वकर्मसंचित पुण्यों के तीव्र फल का परिणाम है। मैं इतना ही कहूँगा कि–

डिम्भेन संविरचिता असमंजसेयं
पादस्तुतिः यद्यपि भावरसैर्विहीना।
वात्सल्यपूर्णहृदयात् तु भवन्तमेषा-
वश्यं धिनोतीति मतिर्दृढा मम।।

(आपके डीठ बच्चे ने यद्यपि भाव रस हीन बेतुकी यह आपके चरण कमलों की स्तुति बनाई पर मुझे आशा है कि वात्सल्य पूर्ण हृदय होने के नाते आपको अवश्य ही यह स्तुति मन को भायेगी।)

ईश्वर-आश्रम ट्रस्ट विशेषतया श्री इन्द्रकृष्ण रैणा सचिव / ट्रस्टी - ईश्वर आश्रम ट्रस्ट के हम आभारी हैं जिन्होंने इस पुस्तक को ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित करने की अनुमति देकर श्री राम-त्रिक-आश्रम का गौरव बढ़ाया। अवश्य ही हमारे सद्गुरु ईश्वरस्वरूप स्वामी लक्ष्मण जी महाराज इनके इस अपूर्व कृत्य से कृतकृत्य होंगे, क्योंकि लक्ष्मण होने के नाते श्री राम उनके लिए आदर्श थे।

इस स्तुति पुष्पाञ्जलि को संचित करने की प्रेरणा जिन महानुभावों और साधकों से मिली उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करके मैं अपने को कृतकृत्य समझता हूँ।

प्रो० मखन लाल कुकिलू

श्री गुरुस्तुतिः

सद्गुरोः शैवाचार्यस्य श्रीरामस्य

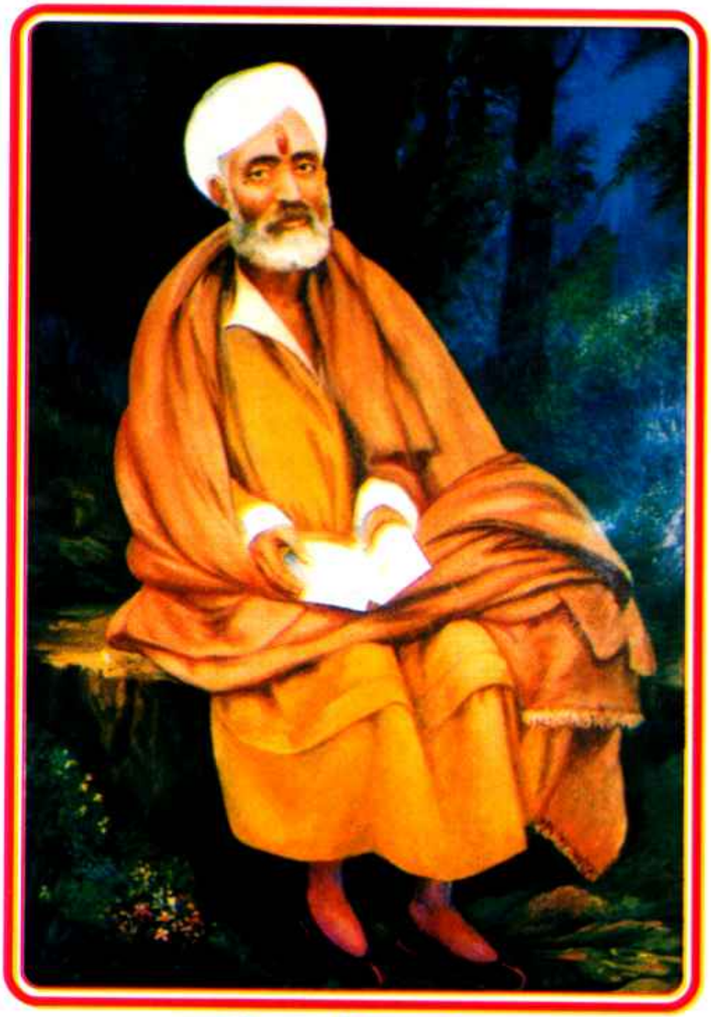

शैवाचार्य सिद्धयोगी

श्रीरामजी महाराज

1855 ईस्वी०
पौषकृष्ण द्वादशी
(आविर्भाव दिवस)

1915 ईस्वी०
माघकृष्ण चतुर्दशी
(निर्वाण दिवस)

प्रथम पुष्प

श्रीरामं सद्गुरुं भजे

शिवभावनामहौषध्याः हेमतुल्यं समुज्ज्वलम्।
त्रिकशास्त्रस्य आचार्यं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।। १।।
सिद्धैर्महर्षिभिः गीतं मन्त्रतज्ञैः सदार्चितम्।
मन्त्राध्यक्षं मन्त्रसारं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।। २।।
सर्वदर्शन सर्वस्वं गुरुणा प्रतिबोधितम्।
धर्माचार्यं धृतिरूपं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।। ३।।
निराशंसं स्वप्रकाशं सर्वाविच्छेदवर्जितम्।
शश्वत् स्पन्दनमयं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।४।।
महास्फुरत्तामयं देवं भावजातस्य भासकम्।
सुधासारं सुधाकारं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।५।।
नादाख्यं परमं बीजं सर्वभूतेष्ववस्थितम्।
संविन्नाथं सार्वरूप्यं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।। ६।।
बन्धमोक्षविहीनं तं ब्रह्मविष्णवीश रूपिणम्।
उभयानन्दकं रम्यं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।७।।

वीर्यं वीर्यवतां योऽस्ति दीक्षा दीक्ष्यं च दीक्षकम्
ध्याता ध्येयं ध्यानरूपं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।८।।
चिन्मात्रं केवलं शुद्धं येन व्याप्तं चराचरम्।
कवलीकृत निःशेषं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।९।।
स्वच्छन्दचेष्टानिरतं मन्त्राणां हृदयात्मकम्।
शङ्काशून्यं आत्मतृप्तं श्रीरामं सद्गुरुंभजे।।१०।।
आनन्दशक्ति -विश्रान्तं सर्वोपाधि-विवर्जितम्।
आदित्यविग्रहं देवं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।११।।
परात्परं परिपूर्णं दीक्षादान विचक्षणम्।
तत्त्वत्रयविनिर्मुक्तं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।१२।।
अविकल्प-प्रकाशैक्यं कर्तृकर्म-क्रियोज्झितम्।
विश्वस्य-जीवितं सत्यं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।१३।।
सत्यवत्याः धवं रामं सत्यस्याचरणे रतम्।
सत्यधर्म-स्वरूपं तं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।१४।।
मनसारामशैवस्य "मुंग" जात्याङ्कितस्य च।
शिष्यं सद् दीक्षितं दिव्यं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।१५।।

राधाधवेन कृष्णेन प्रीत्या सर्वं समर्पितम्।
पुत्रोभूत्वा मोदमानं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।१६।।
कृष्णाख्यो तनयो ह्यस्य वर्षं यावत् गृहान्तरे।
रेमे यस्मै ददौ सौख्यं श्रीरामं मनसा भजे।।१७।।
मुदं यत् हायने प्राप्तं कृष्णेन सह क्रीडनात्।
स कृष्णोऽपि जहौ यं तं श्रीरामं मनसा भजे।।१८।।
वर्षस्यान्ते दिने सायं भूकम्पोऽभूत् भयावहः।
विनष्टं यस्य सर्वस्वं श्रीरामं मनसा भजे।।१९।।
भार्यापुत्रादिसम्पत्ति भूकम्पऽध्वरे हुता
जातं हाटकवत् शुद्धं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।२०।।
शैवागमानां ज्ञानं यत् शिवो यस्मै स्वयं ददौ ।
तेनाधिगत सत्तत्वं श्रीरामं मनसा भजे।।२१।।
भावे भावे भवत्तेजः भूयो भूयोऽनुभूयते।
इत्थं सर्वात्मना व्यक्तं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।२२।।
अकथ्यपदवीरूढं शक्तिस्थं शक्ति वर्जितम्।
द्वयोज्झितं स्वस्वरूपस्थं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।।२३।।

सुवर्णज्ञानवत् ज्ञाता शुद्धा चिति स्वसंविदा।
पदं निरामयं लब्धं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।। २४।।
महः सोमार्कवह्नीनां यत्प्रकाशात् ऋते वृथा।
बोधानलं भासमानं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।। २५।।
करणेद्रियचक्रस्थं देवं संवित्स्वरूपिणम्।
अमृतौघं प्रवर्षन्तं श्रीरामं सद्गुरुं भजे।। २६।।
समस्त-यन्त्रणा-तन्त्र त्रोटने योक्षमः विभुः।
भक्तवृन्दस्य त्रातारं तं रामं सद्गुरुं भजे।। २७।।

जय गुरुदेव।।

द्वितीय पुष्प

श्रीरामाय नमो नमः

सदा सत्यस्वरूपाय शाश्वताय ध्रुवाय च।
सर्वधी साक्षिभूताय श्री रामाय नमो नमः।।१।।
सर्वाराध्याय ध्येयाय सर्वपापविध्वंसिने।
सर्वतीर्थस्वरूपाय श्री रामाय नमो नमः।।२।।
देहाभिमानशून्याय विमुक्ताय विरागिने।
विसर्ग शक्तियुक्ताय श्री रामाय नमो नमः ।।३।।
पौरोहित्य व्रतस्थेऽपि तत्त्वज्ञायाशरीरिणे।
धारणाध्याननिष्ठाय श्रीरामाय नमो नमः।।४।।
सर्वदीक्षितपूज्याय प्रपन्नार्तिहराय च।
सर्वतन्त्रशरीराय श्रीरामाय नमो नमः।।५।।
शरद्वयवसुसोमे रिव्रस्ताब्दे द्वादश्यां तिथौ।
पौषस्य बहुले लेभे जनिं तस्मै नमो नमः।।६।।
माघेऽसिते चतुर्दश्यां शरेन्दुग्रह चन्द्रमे।
लब्धसायुज्यरूपाय श्रीरामाय नमो नमः।।७।।

आदिमध्यान्त निष्ठाय सर्वकारणहेतवे।
उपायत्रयविज्ञाय श्रीरामाय नमो नमः।।८।।
स्वात्मरूपस्य शिष्यस्य लक्ष्मणस्योत्पत्तौ हि यः।
लब्धानन्दातिरेकाय श्रीरामाय नमो नमः।।९।।
रामोऽहं लक्ष्मणश्चायमितिरूपैकधारिणे।
वीतशोकाय स्वस्थाय श्री रामाय नमो नमः।।१०।।
देहे प्रत्ययमुक्ताय सर्वान्त पदगायते।
कलातीताय रम्याय श्रीरामाय नमो नमः।।११।।
पीयूषसक्ताय श्रेष्ठाय ॐ जुं सः मन्त्ररूपिणे।
अमृतेश्वराय देवाय श्री रामाय नमो नमः।।१२।।
वैद्याय चारुरूपाय देवसेव्याय भास्वते।
विद्यार्णवाय जीवाय श्रीरामाय नमो नमः।।१३।।
शशिप्रभाय शान्ताय नयनानन्ददायिने।
नवनीरदरम्याय श्रीरामाय नमो नमः।।१४।।
भवाय पशुनाथाय रुद्राय शंकराय च
शर्वाय भीमरूपाय श्रीरामाय नमो नमः।।१५।।

सर्वात्मने गंभीराय कल्पवृक्षाय हारिणे।
महौजस्काय दिव्याय श्री रामाय नमो नमः।। १६।।
सिद्धनुत्याय नाथाय ईड्याय शोभनात्मने।
तपोमयाय सूक्ष्माय श्री रामाय नमो नमः।। १७।।
वामदेवाय ज्येष्ठाय भैरवेशाय वज्रिणे।
ॐ ह्रीं कराल आस्याय श्री रामाय नमो नमः।। १८।।
अगम्याय सुगम्याय त्रिकालज्ञाय धर्मिणे।
सर्वाचाराय शूराय श्री रामाय नमो नमः।। १९।।
विबुधासुर गण्याय निस्तरङ्गाय नन्दिने।
मालामण्डित देहाय श्रीरामाय नमो नमः।। २०।।
पुष्पे गन्धाय जीवाय देहे जले रसाय च।
सर्वतत्त्वात्मभूताय श्रीरामाय नमो नमः।। २१।।
सुषुम्नाधामसंस्थाय बिससूत्राभरूपिणे।
निरानन्दपदस्थाय श्रीरामाय नमो नमः।। २२।।
व्योमरूपाय व्योमाय परमाकाशशायिने।
अनाश्रिताय गुह्याय श्रीरामाय नमो नमः।। २३।।

मार्तण्डवत् प्रचण्डाय सोमवत् शान्तिदायिने।
संवित्प्रकाश साराय श्री रामाय नमो नमः।। २४।।
कालाग्निरुद्ररूपाय सर्वसौभाग्यदायिने।
वाग्विशुद्धाय ईशाय श्री रामाय नमो नमः।। २५।।
बिन्दुश्चतुष्कलरूपाय साक्षान्मुक्ताय योगिने।
सर्वबन्धनहीनाय श्री रामाय नमो नमः।। २६।।
सिद्धासनसमासीनात् विस्मृतादेहभावना।
संजाताद्वयभावाय श्रीरामाय नमो नमः ।। २७।।
चतुष्पञ्चाशत् अक्षाणां पिकेन ग्रथिता मया।
माला सद्गुरुदेवस्य, शिवो रामः प्रसीदतु।।
भक्तिमान् यः पठेत् नित्यं प्रयतः गुरुसन्निधौ।
अनुपायपदासीनः श्री रामः किं न यच्छति।।

जय गुरुदेव।।

सद्गुरुदेवस्य श्रीरामस्य

अष्टोत्तरशतनामावली

श्री लक्ष्मणस्येव च लक्ष्मणस्य। रामो गुरू राम इव स्तुमस्तम्।।

ह्रीं

श्री रामदेवाय कृपाकराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।१।।

"मन काक" सिद्धस्य शिष्योत्तमाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।२।।

अकोपनासत्यवत्याः धवाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।३।।

कृष्णाख्य पुत्रस्य तातप्रियाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।४।।

अशेष-गन्धर्व सुरार्चिताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।५।।

परावरज्ञाय परात्पराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।६।।

पीयूषरूपाय मृत्युंजयाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।७।।

सौम्याननाय अमृतेश्वराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।८।।

विसर्ग शक्ति प्रसरस्थिताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय

सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ९।।

षडर्धशास्त्रस्य विद्वद्वराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। १०।।

कालाग्निरुद्राय क्षयङ्कराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ११।।

महताबकाकस्य गुरुरुत्तमाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। १२।।

देहाद्यहंकार-विवर्जिताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। १३।।

मार्तण्डरूपाय महेश्वराय

"महताबकाकाय" निरञ्जनाय

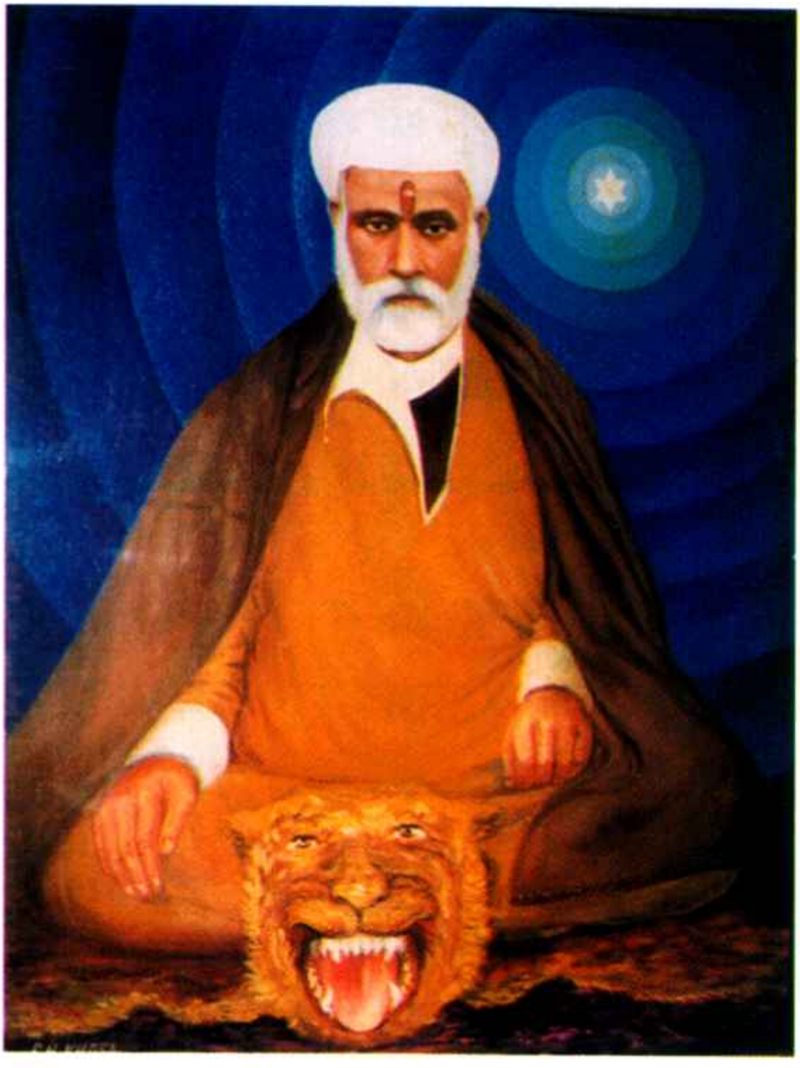

कार्तिक शुक्लपक्ष चतुर्थी
आविर्भावदिवस

१९४४ फाल्गुण शुक्लपक्ष
द्वितीया (निर्वाण दिवस)

ऊर्जस्य शुक्ले च तिथौ चतुर्थ्या जगज्जिगीषून् स्वत ऊर्जयन्तः।
आविर्वभूवुः महताबकाकाः कश्मीर कण्डाभिध जन्मभूमौ।।

प्रभाकराय प्रभास्वराय।
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। १४।।

समाधि लाभेन अभीष्टदाय।
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। १५।।

सर्वशास्त्र-दक्षाय चक्रेश्वराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। १६।।

ब्रह्मस्वरूपाय संवित्‌घनाय।
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। १७।।

श्री लक्ष्मणस्य बहुवल्लभाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय

ईश्वरस्वरूप स्वामी लक्ष्मणजी महाराज

वैशाख कृष्ण द्वादशी
9.5.1907
आविर्भावदिवस

आश्विनकृष्ण चतुर्थी
27.9.1991
समाधिदिवस

रामोऽस्म्यहं लक्ष्मण एषजातः इत्येव गायन् सहसा ननर्त

सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। १८ ।।

साधकस्य विद्याधरस्यप्रियाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। १९ ।।

"कौलाख्य" गोविन्द दीक्षाप्रदाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। २० ।।

भावौघ-शून्याय सर्वार्थदाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। २१ ।।

विवेक वैराग्य व्रतस्थिताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। २२ ।।

गुह्याय शर्वाय सुशोभनाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। २३।।

विकल्प-हीनाय सर्वाश्रयाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। २४।।

अध्वाऽतीताय व्रतस्थिताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। २५।।

सर्वस्वरूपाय सर्वान्तगाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। २६।।

उपास्यदेवाय सदाशिवाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय

सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। २७।।

सोमार्कवह्नित्रय लोचनाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। २८।।

उपाय-विज्ञाय भक्तप्रियाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। २९।।

शान्ताय शुद्धाय मध्यधामगाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ३०।।

शरदभ्रशुभ्राय मनोहराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ३१।।

क्रियावित् रूपाय पादाम्बुजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ३२।।

धनदाय वरदाय दिगम्बराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ३३।।

त्रैलोक्यसाराय मन्त्रात्मकाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ३४।।

नयनाभिरामाय जलजोपमाय।
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ३५।।

अध्यात्मगर्भाय निगमागमाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय

सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ३६।।

शान्ताकलातीत निरञ्जनाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ३७।।

ध्येयाय सर्वाघविध्वंसकाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ३८।।

नाथाय स्तुत्याय तेजोमयाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ३९।।

विरागिने रागवतां प्रियाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ४०।।

त्रिवर्गदात्रे सुरपादपाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ४१ ।।

सर्वात्मभूताय रहःस्थिताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ४२ ।।

श्रीरामदेवाय द्विजवल्लभाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ४३ ।।

विमर्शरूपाय विद्यार्णवाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ४४ ।।

त्रिकालदेवाय श्री भैरवाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय

सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ४५।।

वीरेश-स्तुत्याय दयामयाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ४६।।

बिससूत्ररूपाय कमलाकराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ४७।।

कुण्डलीस्वरूपाय तत्त्वसंरताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ४८।।

भवान्तकायामित आननाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ४९।।

दीक्षात्रये दान विचक्षणाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय॥५०॥

सुधूतनिःशेष मलत्रयाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय॥५१॥

त्रिलोकपूज्याय सुरोत्तमाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय॥५२॥

तन्त्रशरीराय यन्त्रात्मकाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय॥५३॥

भूत औपमन्यव गोत्रोद्भवाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय

सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।५४।।

ज्ञानासिनाच्छिन्नमायागजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदेशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।५५।।

भव्याय हृत्पद्म विकासकाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदेशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।५६।।

कमलेक्षणाय विषमेक्षणाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदेशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।५७।।

सर्वाध्वररूप विभूतिदाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदेशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।५८।।

णादिफान्त रूपाय मातृकात्मकाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।५९।।

सर्वलोकसेव्याय रेवद्वराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।६०।।

योगशास्त्रदक्षाय सर्वेश्वराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।६१।।

भव्याय हृद्याय शुभङ्कराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।६२।।

क्रियैषणावित् विभवभवाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय

सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ६३।।

पराबीजरूपाय मुक्तिप्रदाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ६४।।

"ईश्वर सअब" सिद्धेन प्रतिबोधिताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ६५।।

पुराण पुरुषायनवोदिताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ६६।।

भानुतिथौ पौषकृष्णेभवाय।
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ६७।।

कृपाकटाक्षेण दत्ताभयाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ६८ ।।

साक्षात्-स्वरूपाय परभैरवाय।
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ६९ ।।

ध्रुवाय सत्याय सनातनाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ७० ।।

श्री क्षेत्रपालाय देहस्थिताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ७१ ।।

स्वस्थाय खस्थाय निरामयाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय

सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।।७२।।

आदिमान्त्यरूपाय मन्त्राधिपाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदेशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।।७३।।

बोधात्मभूताय वरदायकाय।
तुभ्यं नमः श्री गुरुदेशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।।७४।।

भक्तार्तिनाशे सततोद्यताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदेशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।।७५।।

दैशिकवर्गेषु प्रभाकराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदेशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।।७६।।

निश्वास उच्छ्वास सन्धिस्थिताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।७७।।

स्वच्छन्द चेष्टासु सुसंस्थिताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।७८।।

''सौदागर'' विज्ञ ''राम'' प्रियाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।७९।।

अज्ञानग्रन्थिरपसारकाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।८०।।

दशनादभेदे दुन्दुभिस्वनाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय

सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।८१।।

सर्ववर्ण श्रेष्ठाय अनुत्तराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।८२।।

कौल सम्प्रदायस्य विशारदाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।८३।।

मरीचिचक्रोदयकारकाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।८४।।

संकल्पहीनाय पिण्डसिद्धिदाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।८५।।

तडित्स्वरूपाय सदोदिताय।
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।८६।।

हंसः स्वरूपाय नवनीरदाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।८७।।

चिद्धानवे श्री साम्बप्रियाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।८८।।

"कैलाससिद्धस्य" बहुमानदाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।८९।।

सुभगाय ज्ञानाग्नि-समुज्ज्वलाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय

सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ९० ।।

परास्वरूपाय शब्दोत्तमाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ९१ ।।

तपनाय मन्त्रार्थ प्रकाशकाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ९२ ।।

स्वयंभू स्वरूपाय उपासकाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ९३ ।।

हृत्-पदम इष्टाय विभाकराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ९४ ।।

प्रकाश-रूपाय विनायकाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ९५ ।।

गगनाग्निरात्मार्कजलानिलाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ९६ ।।

स्वरूप निष्ठाय ज्ञान-प्रदाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ९७ ।।

विलयस्थिति-सर्ग क्रमे रताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय ।। ९८ ।।

अकुलाय गण्याय श्रेयोमयाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय

सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। ९९।।

अनुग्राहिका-शक्ति परा धराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। १००।।

अखण्ड आनन्द रसात्मकाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। १०१।।

अवच्छेदहीनाय सर्वत्रगाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। १०२।।

रामाय स्वात्मानन्द संरताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदैशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।। १०३।।

अद्वैत-तत्त्वाय सर्वेप्सिताय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदेशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।१०४।।

त्रि शक्तिरूपाय त्रिलोचनाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदेशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।१०५।।

लक्ष्मीतिथौ माघ कृष्णस्य मासे
सायुज्य लब्धाय वरामसय
उकाररूपाय महेश्वराय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।१०६।।

योगिनीगणादेश संवाहकाय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदेशिकाय
सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।१०७।।

प्रद्युम्नपीठस्य विद्याधराय
तुभ्यं नमः श्री गुरुदेशिकाय

सिद्धाय रामाय शुकात्मजाय
तुभ्यं नमः श्री गुरवे शिवाय।।१०८।।

———— ••• ————

प्रतिदिनं अनवद्यं सद्गुरोः स्तोत्रमेतत्
पठति अवहितो यो भक्तिमान् प्रीतियुक्तः
स भवति इहलोके पंकसंकल्पमुक्तः
गुरुवर बहुमान्यः सर्वलोकैकपूज्यः।।
सद्गुरोः शिवरूपस्य श्री रामस्य पुरस्थितः
नामावलीं पठेत् भक्तः गुरुस्तस्मै प्रसीदति
गुरोर्माहात्म्य मालेयं सर्व सौख्य विकासिका।
पिकेन गुम्फिता भक्त्या श्रीरामस्य प्रसादतः।।

जय गुरुदेव।।